

Subject: - Sociology Date: - 01/05/2020

Class: - D-II (Subsidiary)

Topic: - विचलित व्यवहार

By: - Dr. Shyamvardan Choudhary Guest Teacher
Maharaja College, Dehliwala, 9504941619

विचलित व्यवहार

Online Study Material No: - (63)

अमेरिकन समाजशास्त्री R.K. Merton ने अपनी पुस्तक 'Social Structure and Social Structure' में विचलित व्यवहार के संदर्भ में अपना विचार प्रस्तुत किया है। यहाँ यह लिखना अप्रासंगिक नहीं प्रतीत होता है कि मर्टन ने प्रथक रूप से विचलित व्यवहार नाम से कोई सिद्धांत प्रस्तुत नहीं किया है। उन्होंने सामाजिक संरचना और विसंगति (Social Structure and Anomie) की विवेचना के संदर्भ में विचलित व्यवहार की व्याख्या प्रस्तुत की है जिसे Merton का विचलित व्यवहार का सिद्धान्त मान लिया जाता है। उनके अनुसार विसंगति की स्थिति विचलित व्यवहार को उत्पन्न करती है। मर्टन ने यह विचार दिया है कि अपने व्यवहार के दौरान व्यक्ति सांस्कृतिक लक्ष्यों (Cultural Goals) तथा संस्थागत साधनों (Institutional Means) को या तो स्वीकार कर लेता है या अस्वीकार कर देता है। सांस्कृतिक लक्ष्यों और सांस्कृतिक साधनों को स्वीकार करने के कारण समाज में अनुरूपता (Conformity) उत्पन्न होती है और अस्वीकार करने के कारण विचलित व्यवहार की समस्या उत्पन्न होती है। Merton के अनुसार कभी-कभी ऐसा भी होता है कि समाज में लोगों को उच्च सांस्कृतिक लक्ष्यों की जानकारी रहती है किंतु इन लक्ष्यों की प्राप्ति किन मान्य साधनों द्वारा की जाय, इसकी स्पष्ट व्याख्या समाज द्वारा प्रस्तुत नहीं की जाती है। ऐसी स्थिति में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में व्यक्ति के लिए भटक जाना स्वाभाविक है। विचलित व्यवहार ऐसी ही स्थिति के परिणाम होते हैं। उदाहरणार्थ - व्यक्ति के लिए यह सांस्कृतिक लक्ष्य तो निर्धारित कर दिया जाता है कि पढ़-लिखकर स्वावलम्बी बने और अपने परिवार के सदस्यों का भरण-पोषण करे किंतु जब कोई व्यक्ति ईमानदारी के शस्त्र पर चलकर इस लक्ष्य को प्राप्त करने में असमर्थ रहता है तो वह अर्पण तरीकों से इस लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। कसबस्वरूप उनका व्यवहार विचलित हो जाता है।

Merton के अनुसार जब सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उपलब्ध साधन कभी-कभी प्रभावहीन तथा पुराने (out of date) हो जाते हैं। इस अवस्था में ये साधन सामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति

(2)

नहीं कर पाते हैं अतः ~~किसी~~ प्रतिभाशाली लोग अपने लक्ष्यों को प्राप्त करते थे और कुछ साधनों की खोज करते हैं।
चूंकि इन साधनों को उस समय तक सामाजिक स्वीकृति प्राप्त नहीं हो पाती, इस कारण उन साधनों को अपनाने वाले अभिनेतों के व्यवहार को समाज द्वारा विचलित व्यवहार कहा जाता है।

मार्टन ने विचलित व्यवहार की विवेचना में इस बात का वर्णन किया है कि जिस प्रकार सामाजिक संरचना और विसंगति में व्यभिचार सम्बन्ध है उसी प्रकार सामाजिक संरचना और विचलित व्यवहार भी व्यभिचार रूप में सम्बन्धित है। मार्टन के अनुसार तीव्र गति से परिवर्तन की स्थिति में विचलित व्यवहारों के उत्पन्न होने की संभावना बढ़ जाती है। कभी-कभी राजनैतिक उथल-पुथल के कारण सामाजिक संरचना में क्रांतिकारी परिवर्तन होता है। ऐसे समय में विचलित व्यवहारों में वृद्धि होती है। भारत में इसी प्रकार का परिवर्तन आजादी प्राप्त होने के समय देश के विभाजन के अवसर पर हुआ था। देश के विभाजन के समय अनेक शरणार्थी यहाँ आए। उन शरणार्थियों को यहाँ पर जमीन के लिए अनेक गलत और सामाजिक प्रथाओं के विपरीत कार्य करने पड़े। साथ ही यहाँ के भी अनेक लोगों ने सामान्य शिष्टाचार और रीति-नीति से हटकर उनका खुब खोषण किया। इस प्रकार दोनों ही ओर से विचलित व्यवहारों का खुब प्रदर्शन हुआ।

मार्टन ने सामाजिक नियमन के सिद्धान्त में कहा है कि सामाजिक संरचना में तीव्र गति से परिवर्तन के दौरान लोगों की प्रस्थिति और भूमिका में भी परिवर्तन आवश्यक मभावी हो जाता है। पूर्वोक्त प्रस्थिति में अपनी नयी भूमिका को निभाना एक कठिन कार्य है। जिनके लिए यह कठिन कार्य सिद्ध होता है उनका व्यवहार विचलित हो जाता है। मार्टन के अनुसार सामाजिक संरचना में तीव्र परिवर्तन के कारण अनेक स्थापित सामाजिक सम्बन्ध टूट जाते हैं। सामाजिक संस्थाओं तथा रुढ़ियों में संघर्ष उत्पन्न होता है और समाज के सदस्यों की प्रस्थितियाँ एवं भूमिकाएँ भी उलट सकती हैं। ये सभी अवस्थाएँ सामाजिक असंतुलन को उत्पन्न करती हैं और यह सामाजिक असंतुलन विचलित व्यवहारों को उत्पन्न करता है।

मार्टन ने विचलित व्यवहार के चार स्वरूपों का भी उल्लेख

किया है जो निम्नलिखित है :-

- (1) नवान्यार (Innovation) → मर्टन के अनुसार नवान्यार में संस्थागत व्यवहार प्रणालियों को नो अस्वीकार किया जाता है या त्याग दिया जाता है, किंतु सांस्कृतिक लक्ष्यों को सुरक्षित रखा जाता है। इसका मतलब कि नवान्यार के अन्तर्गत पुरानी व्यवहार प्रणालियों या तरीकों को त्यागकर नए या संशोधित तरीकों को अपनाया जाता है, यद्यपि सांस्कृतिक लक्ष्य वही रहता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि नवान्यार की स्थिति में व्यक्ति सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए समाज द्वारा स्वीकृत तरीकों से दूर-दूरकर या उन्हें त्यागकर कुछ नए या संशोधित तरीकों को अपनाता है। कलस्वरूप उसका व्यवहार विचलित व्यवहार बन जाता है। मर्टन ने इस बात का भी उल्लेख किया है कि जब कुछ लोग संस्थागत तरीकों से दूर दूरकर या त्याग कर भी सांस्कृतिक लक्ष्यों की प्राप्ति में सफल हो जाते हैं तो यह सफल व्यवहार अन्य अनेक लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है और वे भी उसी रूप में व्यवहार करना आरंभ कर देते हैं। ऐसी परिस्थिति में समाज में विचलित व्यवहार रूढ़ि फैलता है।

Merton के अनुसार समाजशास्त्र के दृष्टिकोण से समूह के आवीर्ण-दर्श-नियमों से प्रत्येक प्रकार का विचलन उस समूह के आधारभूत मूल्यों एवं अनुकूलन के लिए आवश्यक रूप में हानिकारक परिणामों को उत्पन्न करने वाला या भूकायात्मक (Deviant) नहीं होता। समाज के प्रचलित मूल्यों का निष्ठापूर्वक पालन केवल उसी समाज या समूह में हो सकता है जो पूर्णरूपेण स्थिर हो और जहाँ की सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों में कभी कोई परिवर्तन होता ही न हो। इस प्रकार के नवान्यार के कलस्वरूप नए संस्थागत व्यवहार-प्रतिमानों का निर्माण हो सकता है जो कि पुराने तरीकों से अधिक उपयोगी और उपभुक्त सिद्ध होते हैं।

मर्टन के अनुसार यह मान्यता गलत है कि विचलित व्यवहार आवश्यक रूप में सामाजिक अकार्य के समुद्र लय या समान है और सामाजिक अकार्य नैतिक नियमों का उल्लंघन ही है। प्रत्येक समाज के इतिहास में उसके कुछ सांस्कृतिक नायकों को वीर इसलिए माना गया है क्योंकि उनमें समूह में उस समय प्रचलित आदर्श-नियमों से दूर हटने का साहस और दूर दृष्टि रही थी। सुकरात, गैलिलीयो, चैल्डन, शंकराचार्य, राममोहनराय, स्वामी दयानंद सरस्वती आदि महापुरुषों

(1)

को अपने समय के प्रचलित सामाजिक नियमों से दूर रहने के लिए समाज द्वारा कितने ही हिंसक विरोधों का भी सहना पड़ा था, पर वे ही आज के सांस्कृतिक नायक हैं।

(2)

कर्मकाण्ड (Rituals) → मर्तन के अनुसार कर्मकाण्डों का व्यवहार भी विचलित व्यवहार का द्योतक है। मर्तन ने यह विचार दिया है कि एक कर्मकाण्डों संस्थागत नियमों पर इतना अधिक बल देने लगा है कि उसका व्यवहार, प्रतिमान सामान्य व्यवहार, प्रतिमान से भिन्न हो जाता है और इसी अर्थ में उसके व्यवहार को विचलित व्यवहार कहा जा सकता है। एक भारतीय उदाहरण द्वारा इस स्थिति को स्पष्ट किया जा सकता है। धर्म सूत्रकारों ने लड़कियों के बाल-विवाह के पक्ष में राय दी और धीरे-धीरे स्मृतिकारों ने मासिक धर्म के पहले ही विवाह करने की अनुमति दे दी। कर्मकाण्डियों ने इस अनुमति पर इतना अधिक बल देना प्रारंभ किया कि लोगों में अपनी लड़कियों का विवाह जल्द से जल्द कर देने की आपस में होड़ सी लग गयी और दो-चार साल की अवस्था में भी कन्याओं का विवाह होने लगा। स्पष्ट है कि धर्म सूत्र और शास्त्र पुराने में उल्लेखित नियमों के कठोरतम पालन के कारण ऐसे लोगों का व्यवहार विचलित व्यवहार की श्रेणी में चला गया।

(3)

अपसरण (Ritualism) → मर्तन ने अपसरण को भी विचलित व्यवहार का एक स्वरूप माना है। अपसरण वह व्यवहार, प्रतिमान है जिसमें कभी सम्मानित माने जाने वाले सांस्कृतिक लक्ष्यों एवं इन लक्ष्यों को प्राप्त करने की संस्थागत कार्य प्रणालियाँ दोनों को ही पर्याप्त रूप में दुर्भाग्य दिया जाता है। समस्यात्मक परिवारों के व्यवहार, प्रतिमानों को इसी श्रेणी में रखा जाने लगा है। इन परिवारों के सदस्यों का व्यवहार-प्रतिमान उनके सामाजिक पर्यावरण में पृथी जाने वाली आदर्शात्मक प्रत्याशाओं के अनुरूप नहीं होता। इसी कारण उसे विचलित व्यवहार माना जाता है।

(4)

विद्रोह (Rebellion) → मर्तन के अनुसार विद्रोह भी विचलित व्यवहार का एक स्वरूप है। उनके अनुसार विद्रोह उस व्यवहार, प्रतिमान का द्योतक है जबकि समाज का एक समूह दूसरे समूह द्वारा मान्य सांस्कृतिक मूल्यों, आदर्शों और नियमों को मानने से इन्कार कर देता है एवं स्वयं अपने लिए नए मूल्यों, नियमों एवं मान्यताओं को विकसित करता है। युवा क्रियावाद या आन्दोलन

(5)

(Youth activism or movement) जिसका एक विशिष्ट उप संस्कृति होती है। इस प्रकार के विद्रोही समूह का एक उत्तम उदाहरण है। पुराना जमाना अब नहीं रहा जबकि युवा वर्ग और वृद्ध परम्परागत लक्ष्यों और संस्थागत नियमों का अनुसरण करता था। अब यह वर्ग अपने चारों ओर की परिस्थितियों विशेषकर शिक्षा, नियोजन, आर्थिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों एवं समस्याओं के सम्बन्ध में उत्तरोत्तर सूचेत होता जा रहा है। वर्तमान परिस्थितियों में जब उसकी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती है तब वह विद्रोही बन जाता है और उसे वाद्य होकर आंदोलनात्मक कदम उठाना पड़ता है। उसे ही उससे स्वीकृत व्यवहार परिमानों का उल्लंघन होता है। उसकी आंदोलनात्मक क्रियाओं में कुलपति का चौराव करना, विध्वनिवालयों तथा महाविद्यालयों के कार्यालयों का कार्य बाधित करना या ठप करना, जुलूस निकालना, नारेबाजी करना, लोड़-फोड़ करना, भाग लगाना, हड़ताल करना, पहन-पाठन बन्द करना आदि सम्मिलित हैं। ये सब व्यवहार विचलित व्यवहार के ही द्योतक हैं।

आलोचना (Criticism)

R. K. Merton के विचलित व्यवहार के सम्बन्ध में विचार कुछ रूपों में दोषपूर्ण प्रतीत होता है जो निम्न हैं -

(क) Merton ने विचलित व्यवहार को सामाजिक संरचना में व्यक्ति की स्थिति के संदर्भ में समझने का प्रयत्न किया है। कुछ लोगों का कहना है कि विचलित व्यवहार केवल समाज द्वारा मान्य या स्वीकृत व्यवहार परिमान से विचलन की स्थिति होती है। जैसे - शराबखोरी, नेश्यावृत्ति, व्यावसायिक अपराध, समलैंगिक सम्भोग इत्यादि।

(ख) Merton ने विचलित व्यवहार से विसंगति को मिन बतया है किंतु इन दोनों में स्पष्ट अन्तर बताने में असफल सिद्ध होते हैं जो इनके इस सिद्धान्त का एक दोष कहा जा सकता है।

S. N. Choudhary
Mamta College
K. N. M. U